RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 30 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 29 दिसम्बर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

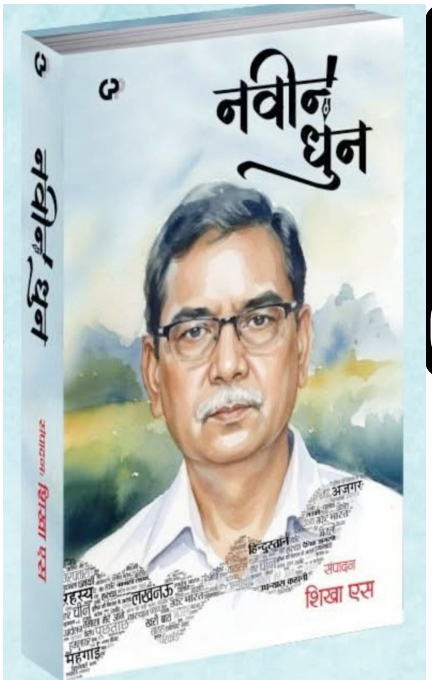

पत्रकारिता राजनीति के लिये नहीं बल्कि समाज से अंधियारा छांटने के लिये होनी चाहिए : नवीन जोशी

चेतनाशील लोगों का जमावड़ा इस आयोजन में हुआ जिसमें वर्तमान की पत्रकारिता और राजनीति को लेकर चुभन दिखाई दी। मंच पर हुए सम्वाद के अलावा चाय और चटकारों से साथ हो रही बातचीत में सभी ने इस दर्द को उकेरा कि पत्रकारिता गिरोहबन्दी जैसा काम होने लगा है जो राजनेताओं के दबाव में बिकने को तैयार है। ऐसे में मिशन की पत्रकारिता बहुत ही जोखिम का काम है। फिर भी सच तो हमेशा सच ही रहेगा चाहे कितना ही गला घोट दिया जाए।

कार्यालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी। लेखक, पत्रकार नवीन जोशी के व्यक्तित्व, कार्यशैली और कृतित्व पर अपनी तरह की अनोखी पुस्तक 'नवीन धुन' का लोकार्पण रामपुर रोड स्थित अतिथि रेस्टोरेन्ट में हुआ। पत्रकारिता के पेशे में पाँच दशक से लम्बी यात्रा के दौरान अखबारों में उनके सहयोगियों व संस्मरणों पर आधारित यह पुस्तक ग्रे पैरट प्रकाशन से छपी है। एक संस्मरणात्मक पुस्तक में उनके अनुभवों और जीवन की कहानियों को साझा किया गया है। इसमें तीस से अधिक पत्रकारों के संस्मरण और अनुभवों का संकलन है। 470 पेज के इस दस्तावेज में का पहले लखनऊ में विमोचन हो चुका है। जिसमें वरिष्ठ पत्रकार कमर वहीद नकवी और पार्थ सारथी सेन शर्मा ने भाग लिया। 'नवीन धुन' की बेहद सराहना के बाद हल्द्वानी में यह दूसरा बड़ा आयोजन हुआ।

हल्द्वानी में हुए कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नैनीताल समाचार के सम्पादक राजीवलोचन साह को आना था किन्तु स्वास्थ्य कारणों से वह नहीं आ सके। उपस्थिति विशिष्ट जनों ने नवीन जोशी और उनकी धुन को लेकर सम्वाद किया। आशुतोष उपाध्याय ने पत्रकारिता के अपने अनुभवों के साथ ही नवीन जोशी को सीखने वालों के लिये अभिभावक के रूप में माना। भास्कर उप्रेती ने हिन्दुस्तान अखबार में नवीन जोशी जी के समय की चर्चा के साथ ही उन यादों को साझा किया जब पत्रकारिता के मायने माने जाते थे।

प्रसिद्ध कथाकार और हिन्दुस्तान के सम्पादक रहे नवीन जोशी पर उनके समय-समय पर विभिन्न अखबारों में मित्र, सहकर्मी रहे लोगों ने संस्मरणों पर आधारित पुस्तक लिखी है- 'नवीन धुन'। इसका सम्पादन वरिष्ठ पत्रकार शिखा एस ने किया। यह पुस्तक एक व्यक्ति की कहानी मात्र न होकर उस दौर की धड़कन है जब पत्रकारिता केवल पेशा नहीं एक जिम्मेदारी और सम्वेदना थी। इसमें नीवन जोशी और उनके साथियों की यादें दर्ज हैं, जिन्हें पढ़ने के बाद वे कई दिनों तक मन-मस्तिष्क में दर्ज रहती हैं बल्कि हमेशा झंकृत भी करती हैं कि क्या होना चाहिये और क्या हो रहा है।

इस पुस्तक को लेकर नवीन जोशी ने कहा, 'यदि मैं 2014 की बजाय 2024 में सेवानिवृत्त होता तो शायद यह पुस्तक नहीं होती। और यदि राजेन्द्र माथुर, मृणाल पाण्डे जैसे सम्पादकों का सानिध्य और सधे हुए साथियों का साथ न होता तो भी यह पुस्तक नहीं होती।' वाकेई जिस प्रकार की यादों को श्री जोशी ने सम्वाद में रखा वह वर्तमान के हालातों में झकझोरने वाली हैं। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता राजनीति के लिये नहीं बल्कि समाज से अँधियारा छांटने के लिये होनी चाहिए। इसके लिये उन्होंने कई उदाहरण अपनी पत्रकारिता के दिनों के दिये जब किसी सूचना के प्राप्त होने पर उसके पीछे की सच्चाई को पत्रकार जाँचता था। श्री जोशी ने कहा कि पत्रकारिता का दौर बदल गया है और इसके तरीके बदलते जा रहे हैं लेकिन कलम के सिपाही को न्याय की भूमिका नहीं भूलनी चाहिये। समाज को दिशा देने में पत्रकार जगत का योगदान हमेशा रहा है इसलिये अपनी इस जिम्मेदारी को समझना होगा।

नवीन जोशी पर केन्द्रित पुस्तक नवीन धुन समाज जागृति की दिशा में नया श्रृंगार है। पत्रकारों के अलावा सभी के लिये यह सीख भी है।

भारत के मीलपत्थर

परमज्ञान के पूर्णावतार शुकदेव

सूर्यकान्त बाली

शुकदेव वेदव्यास के पुत्र थे। तो कायदे से वेदव्यास का विवरण हमको पहले देना चाहिए था। पर अगर हम व्यास को अगली बार के लिए आरक्षित कर पहले उनके पुत्र के बारे में बता रहे हैं तो इसके कारण के रूप में दो अच्छी घटनाएँ जान ली जाएं। जब शुकदेव अभी कुछ वर्ष के बालक ही थे तो उन्हें एक दिन सहसा वैराग्य हो गया। अब वैराग्य कोई ऐसी चीन तो है नहीं जो क्रमशः होती है। नहीं हुआ तो आजीवन, जीवन-प्रतिजीवन नहीं हुआ और हो गया तो किसी भी क्षण गया। जब शुकदेव जी को वैराग्य हो गया तो वे अपने पिता व जो कुछ भी परिवार में था सब कुछ छोड़कर जंगल की ओर चल पड़े। पीछे से पिता व्यास उन्हें बुलाते रहे। (द्वैपायनं विरहकातर आजुहाव, यानी शुक के विरह में पागल द्वैपायन व्यास उन्हें बुलाते ही रह गए, भागवत पुराण, मंगलाचरण) पर शुकदेव ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और चलते ही गए। बाद में शुकदेव का यदाकदा हस्तिनापुर आना जाना चलता रहा, हस्तिनापुर नरेश परीक्षित को भागवत भी उन्होंने ही सुनाई थी, पर वे विरक्त ही रहे और वेदव्यास से उनका पितापुत्र सम्बन्ध वैराग्यभाव में बदल चुका था।

दूसरी घटना और भी ज्यादा आकर्षक है। शुकदेव जी मार्ग में जा रहे थे और रास्ते में नहीं पड़ी। अपने वस्त्रों को किनारे उतारकर कुछ स्त्रियां वहाँ नदी में नहा रहीं थी। शुकदवे के पिता वहाँ पहुँचे तो स्त्रियों ने उन्हें दूर से आता देखकर तुरन्त स्नान समाप्त कर वस्त्र आदि पहल लिए। व्यास के लिए यह हैरान होने का मामला था। वे हैरान थे कि उनका युवा पुत्र वहाँ पहुँचा तो स्त्रियां निर्वस्त्र स्नान करती रहीं, पर जब वयोवृद्ध व्यास जी वहाँ पहुँचे तो स्त्रियाँ सँभल गई। हैरान व्यास ने ठीक यही बात उन स्त्रियों से पूछ ली तो उन्हें जवाब मिला कि युवा होने के बावजूद शुकदेव के मन में स्त्री पुरुष भेद नहीं है जबकि वृद्ध होने के बावजूद उनके पिता व्यास के हृदय में यह भेद बाकायदा बना हुआ है।

इस तरह के शुकदेव को व्यास के पुत्र सम्बन्ध में बाँधने का भला हमें क्या अधिकार है? इसलिए भागवत सुनने वाले का और भागवत पुराण का विवरण देने के बाद हम भागवत सुनाने वाले का विवरण दिए बिना कैसे रह सकते हैं? पर समस्या यह है कि जिस शुकदेव को किशोरावस्थ पार करते ही वैराग्य हो गया हो, उनके जीवन में ऐसा क्या घटा होगा कि जिसका विवरण हम यहाँ सिलसिलेवार दे सके? इसलिए दो चार ऐसी बातें ही बताई जा सकती हैं जिनका प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उनके वैराग्य से ही है। मसलन, जब शुक अभी किशोरावस्था में ही थे और वेदव्यास को अपने पुत्र के दार्शनिक स्वभाव के बारे में पूर्ण अभास हो गया था कि उनमें परमाानी बनने की पूरी सम्भावनां हैं, इसलिए उन्होंने शुक से कहा कि वे अपने समय के परम ज्ञानी सम्राट महावशी जनक से ज्ञान प्राप्त करने के लिए मिथिला जाएँ। ये वही जनक हैं जिनके बारे में हम कभी बता आए हैं कि कैसे सीता के पिता जनक के बारे में भ्रम फैल गया कि वे ही परमज्ञानी थे, जबकि जिस जनक को हम परम्परा से परमज्ञानी के रूप में जानते हैं यही वे महावशी जनक हैं जिनकी राजसभा में अध्यात्म चर्चाएं हुआ करती थीं और जिनके राजदरबार में ही याज्ञवल्क्य और गार्गी वाचवनवी के बीच भव्य ऐतिहासिक सम्वाद हुआ था। ये जनक परीक्षित और उनके पुत्र जनमेजय के समय, यानी युधिष्ठर के बाद के समय में मिथिला में शासन कर रहे थे। पर व्यास ने एक खास बात अपने पुत्र से यह कह दी कि वू पूर्ण नग्न होकर ही मिथिला तक की यात्रा करें। शायद उद्देश्य यही होगा कि वैसे यात्रा करने पर, जाहिर है कि रास्ते में गाँव भी पड़ेगा, नगर भी आएंगे, नर भी होंगे और नारियां भी होगी, शुक के इस तरह से मोह टूटने की प्रक्रिया और तेज होगी।

सुनकर आश्चर्य होगा कि वेदव्यास की माँ का नाम क्या था। सब जानते हैं कि शुकदेव के पिता का नाम वेदव्यास था, पर सब को अब यह मालूम होना चाहिए कि शुकदेव की माँ का नाम क्या था। उनका नाम था घृताची। घृताची एक अप्सरा थी जो कश्यप और प्राधा की कन्या मानी जाती है। इसने किसी से भी विवाह नहीं किया था, पर शायद ऋषियों को शारीरिक सुख देने में इसे खास तृप्ति मिलती थी। वेदव्यास का भी घृताची से विवाह नहीं हुआ था, पर घृताची से उन्हें शुकदेव नामक पुत्र की प्राप्ति वैसे ही हुई थी जैसे भरद्वाज मुनि को घृताची ने द्रोण नामक पुत्र दिया था। थोड़ा रोचक जानकारी बढ़ा ली जाए? जब शुकदेव का जन्म हुआ तब तक न केवल महाभारत युद्ध हो चुका था बल्कि युधिष्ठर का छत्तीस वर्ष का कुल राज्यकाल या तो समाप्त हो चुका था या समाप्त होने वाला था। जाहिर है कि शुकदेव के जन्म से करीब तीन दशक पूर्व ही द्रोण का वध हो चुका था। पर जिस घृताची ने द्रोण को जन्म दिया, उसी घृताची ने शुकदेव को भी जन्म दिया। तो पहली बात तो यह हुई कि एक ही माँ घृाताची अप्सरा से पैदा होने के कारण द्रोण और शुकदेव सहोदर भाई हुए अगर एक ही माता से पैदा होने

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)